HIKKA(हिक्का)

Dr. Pratiksha Sharma
Assistant Prof.
kayachikitsa department

परिभाषा

शरीर के द्वारा (उदान एवम् प्राण वायु ,यकृत,प्लीहा और आंतो के द्वारा) हिक्क ऐसे शब्द के साथ श्वास का बाहर निकला जाना हिक्का कहलाता है!

निदान:

१.आहाराज निदान –गुरु ,विष्टम्भी ,अभिस्यंदी,रुक्ष,शीतल व विदाही आहार का सेवन,विषमाशन एवम् अजीर्ण

२.विहाराज निदान – शीतल स्थानों पर निवास ,धूल,धूम,तीव्र वायु सेवन,अति व्यायाम ,अति मैथुन,अति साहस ,वेगधारण ,अप तर्पण एवम् अतिमार्ग गमन

३.अन्य निदान –वमन ,विरेचन का अतियोग

विशिष्ट-निदान

कुछ व्याधियों के अन्त में भी हिक्का उत्पन्न होती हैं!अतः ये व्याधियाँ भी हिक्का का निदान हो सकती हैं-यथा पांडु,अलसक,उरःक्षत,क्षय ,उदावर्त ,रक्तपित्,विसूचिका,अतिसार,ज्वर ,छर्दी एवम् प्रतिश्याय आदि !

२ किसी भी रोग से आक्रांत व्यक्ति के जीवन के अंतिम अवस्था में तीव्र वेदनाप्रद हिक्का उत्पन्न हो सकती हैं

सामान्य सम्प्राप्ति

मारुतः प्राणवाहीनि स्रोतांस्याविश्य कुप्यति|
उरःस्थः कफमुद्धूय हिक्काश्वासान् करोति सः||१७||
घोरान् प्राणोपरोधाय प्राणिनां पञ्च पञ्च च|१८|

सम्प्राप्ति

सामान्य सम्प्राप्ति

प्राणोदकान्नवाहीनि स्त्रोतांसि सकफोऽनिलः|
हिक्काः करोति संरुध्य तासां लिङ्गं पृथक् शृणु||
२१||

क्षीणमांसबलप्राणतेज

सम्प्राप्ति चक्र

- निदान सेवन
- वात-प्रकोप
- वायु द्वारा उरः स्थित कफ को ऊपर की ओर उभारना
- कफ सहित वायु द्वारा प्राण, अन्न,उदकवह स्त्रोतसो में रुकावट
- हिक्-हिक़ ध्वनिके साथ हिक्का की उत्पत्ति

सम्प्राप्ति घटक

दोष	-	कफ- वायु(प्राण ,उदान)
दूष्य	-	रस ,श्वास वायु
अधिष्ठान	-	आमाशयोत्व व्याधि ,स्वर यन्त्र
स्रोतस	-	प्राण,अन्न,उदक वह
स्रोतों दुष्टि प्रकार	–	संग ,विमार्गगमन
स्वभाव	–	मृदु
अग्निदुष्टि	-	अग्नि मांध
साध्य असाध्यता	–	साध्य

-

भेद

आचार्य चरक ने श्वास के निम्न पांच भेद बताये है –

१ महाहिक्का

२ गम्भीरा हिक्का

३ व्यपेता हिक्का

४क्षुद्र हिक्का

५ अन्नजा हिक्का

पूर्वरूप

१ कंठ एवं उरः प्रदेश में भारीपन

२ मुख में कसेलापन लगना

३ उदर में आध्मान

४ अरति

कण्ठोरसोर्गुरुत्वं च वदनस्य कषायता।
हिक्कानां पूर्वरूपाणि कुक्षेराटोप एव च।।१९।

महाहिक्का के लक्षण

महावेग युक्त व महा उपद्रव युक्त होने से इसे महा हिक्का कहते हैं।

यह शीघ्र ही प्राण हरने वाली होती है !

महामूल,महावेग ,महाशब्द व महाबल वाली होने से यह हिक्का सध :संघाती कही गयी है

क्षीणमांसबलप्राणतेजसः सकफोऽनिलः।
गृहीत्वा सहसा कण्ठमुच्चैर्घोषवतीं भृशम्।।२२।।
करोति सततं हिक्कामेकद्वित्रिगुणं तथा।
प्राणः स्त्रोतांसि मर्माणि संरुध्योष्माणमेव च।।२३।।
सञ्ज्ञां मुष्णाति गात्राणां स्तम्भं सञ्जनयत्यपि।
मार्गं चैवान्नपानानां रुणद्ध्युपहतस्मृतेः।।२४।।
साश्रुविप्लुतनेत्रस्य स्तब्धशङ्खच्युतभ्रुवः।
सक्तजल्पप्रलापस्य निर्वृतिं नाधिगच्छतः।।२५।।
महामूला महावेगा महाशब्दा महाबला।
महाहिक्केति सा नृणां सद्यः प्राणहरा मता।।२६।।
।

गम्भीरा हिक्का

गम्भीर शब्द व प्रतिध्वनि युक्त हिक्का गंभीरा कहलाती है !

यह पक्वाशय व नाभि से उत्पन्न होती हैं !

आचार्य चरक ने इसे प्राणअन्तिकी कहा है!

हिक्कते यः प्रवृद्धस्तु कृशो दीनमना नरः|
जर्जरेणोरसा कृच्छ्रं गम्भीरमनुनादयन्||२७||
सञ्जृम्भन् सङ्क्षिपंश्चैव तथाऽङ्गानि प्रसारयन्|
पार्श्वे चोभे समायम्य कूजन् स्तम्भरुगर्दितः||२८||
नाभेः पक्वाशयाद्वाऽपि हिक्का चास्योपजायते|
क्षोभयन्ती भृशं देहं नामयन्तीव ताम्यतः||२९||
रुणद्ध्युच्छ्वासमार्गं तु प्रनष्टबलचेतसः|
गम्भीरा नाम सा तस्य हिक्का प्राणान्तिकी मता||३०||
इति गम्भीरा हिक्का|

व्यपेता हिक्का

चतुर्विध अन्न के सेवन से उत्पन्न होने वाली तथा जत्रुमूल से प्रारम्भ होने वाली हिक्का व्यपेता हिक्का कहलाती हैं!

व्यपेता जायते हिक्का याऽन्नपाने चतुर्विधे|
आहारपरिणामान्ते भूयश्च लभते बलम्||३१||
प्रलापवम्यतीसारतृष्णार्तस्य विचेतसः|
जृम्भिणो विप्लुताक्षस्य शुष्कास्यस्य विनामिनः||३२||
पर्याध्मातस्य हिक्का या जत्रुमूलादसन्तता|
सा व्यपेतेति विज्ञेया हिक्का प्राणोपरोधिनी||३३||
इति व्यपेता हिक्का|

क्षुद्र हिक्का

कभी –कभी मंद वेग से उत्पन्न होने वाली हिक्का क्षुद्र हिक्का कहलाती है !
अल्प कुपित वात जब कोष्ठ से उदर प्रदेश में आती है तब क्षुद्र हिक्का उत्पन्न होती है!

क्षुद्रवातो यदा कोष्ठाद्व्यायामपरिघट्टितः।
कण्ठे प्रपद्यते हिक्कां तदा क्षुद्रां करोति सः।।३४।।
अतिदुःखा न सा घोरःशिरोमर्मप्रबाधिनी।
न चोच्छ्वासान्नपानानां मार्गमावृत्य तिष्ठति।।३५।।
वृद्धिमायस्यतो याति भुक्तमात्रे च मार्दवम्।
यतः प्रवर्तते पूर्वं तत एव निवर्तते।।३६।।
हृदयं क्लोम कण्ठं च तालुकं च समाश्रिता।
मृद्वी सा क्षुद्रहिक्केति नृणां साध्या प्रकीर्तिता।।३७।।
इति क्षुद्रहिक्का।

अन्नजा हिक्का

अविधिपूर्वक भोजन के सेवन से अर्थात् अधिक प्रमाण में शीघ्रता पूर्वक अन्नपान करने से , अति तीक्ष्ण मध सेवन से पीड़ित वायु कोष्ठ से ऊर्ध्व प्रदेश में गमन कर अन्नजा हिक्का उत्पन्न करती है

सहसाऽत्यभ्यवहृतैः पानान्नैः पीडितोऽनिलः।
ऊर्ध्वं प्रपद्यते कोष्ठान्मद्यैर्वाऽतिमदप्रदैः।।३८।।
तथाऽतिरोषभाष्याध्वहास्यभारातिवर्तनैः।
वायुः कोष्ठगतो धावन् पानभोज्यप्रपीडितः।।३९।।
उरःस्रोतः समाविश्य कुर्याद्धिक्कां ततोऽन्नजाम्।
तथा शनैरसम्बन्धं क्षुवंश्चापि स हिक्कते।।४०।।
न मर्मबाधाजननी नेन्द्रियाणां प्रबाधिनी।
हिक्का पीते तथा भुक्ते शमं याति च साऽन्नजा।।४१।।
इत्यन्नजा हिक्का।

साध्यासाध्यता

- महा,गंभीरा एवं व्यपेता हिक्का असाध्य होती है
- क्षुद्र एवं अन्नजा हिक्का साध्य होती है !
- प्रलाप आदि लक्षण उत्पन्न होने से हिक्का असाध्य होती है !
- वृद्ध व्यक्ति व अति व्यायाम करने वाले व्यक्ति की हिक्का असाध्य होती है !
- जिस रोगी म दोष अधिक प्रकुपित हो व शरीर अनशन से कृश हो गया हो गया हो उसमे भी हिक्का असाध्य होती है
- हिक्का के कारण जिसका सम्पूर्ण शरीर खीच जाये ,भोजन में अरुचि हो जाये ,अत्यधिक छिंके आये तो वह हिक्का असाध्य होती है

अतिसञ्चितदोषस्य भक्तच्छेदकृशस्य च।
व्याधिभिः क्षीणदेहस्य वृद्धस्यातिव्यवायिनः॥४२॥
आसां या सा समुत्पन्ना हिक्का हन्त्याशु जीवितम्।
यमिका च प्रलापार्तितृष्णामोहसमन्विता॥४३॥
अक्षीणश्चाप्यदीनश्च स्थिरधात्विन्द्रियश्च यः।
तस्य साधयितुं शक्या यमिका हन्त्यतोऽन्यथा॥
४४॥

अतीत्यादिना साध्यासाध्यविभागमाह| अतिशयेन सञ्चिता दोषा यस्य स तथा| भक्तच्छेदकृशस्येति अभोजनदुर्बलस्य| आसां पञ्चानां या हिक्का अतीत्यादिना प्रोक्तलक्षणस्य पुरुषस्य भवति सा जीवितं हन्ति| यमिका चेत्यनेन क्षुद्रा अन्नजा च या साध्यत्वेनोक्ता सा यमलवेगेन जायमाना यमिका ज्ञेया; पूर्वोक्तानुवेगेन या जायमाना सा महाहिक्का, सा स्वरूपेणैवासाध्या, तस्या अतीत्यादियोगेनासाध्यताविधानमनर्थकम्| तथा महत्यादिहिक्कानां तिसृणामसम्पूर्णलक्षणानां साध्यत्वं, क्षुद्रान्नजयोस्तु सम्पूर्णलक्षणयोरपि साध्यत्वं, महाहिक्कादित्रयं निसर्गत एवासाध्यम्| अन्ये तु ब्रुवते- महाहिक्कादयोऽपि कदाचित् साध्या भवन्त्येव, तत्र प्राणान्तिकेति वचनं प्रायः प्राणहरा इत्यभिप्रायेणोक्तम्| तथाहि जतूकर्णे- "आद्या दुःसाध्या, यमिका तृष्णामोहवतां सद्यःप्राणहृत्, गम्भीरा व्यपेते च" इत्युक्तम्| अक्षीण इति अक्षीणमांसः||४२-४४||

आचार्य चरक ने हिक्का व श्वास का चिकित्सा सिद्धांत एक ही मन है

निदान परिवर्जन

स्नेहन व स्वेदन

कफ वात शामक आहार विहार का सेवन

वमन

धूम्रपान

योगाभ्यास

चिकित्सा सिद्धांत

चिकित्सा

संशोधन चिकित्सा – १ स्नेहन –स्वेदन

२ वमन कर्म

३ नस्य कर्म

४ धूम्रपान

2 संशमन चिकित्सा – १ लेह योग

२ नस्य योग

लेह योग –

आमलकी चूर्ण त था कपित्थ के रस में मधु एवं पिप्पली मिलाकर चाटने को दे

हरीतकी चूर्ण २ ग्राम मधु से बार बार चटायें

मयूर पिच्छ भस्म एवं पीपर चूर्ण शहद से प्रति एक घंटे में चटाये

कुटकी चूर्ण एवं शुद्ध स्वर्णगैरिक समभाग लेकर शहद से चटाये

नस्य योग

मुलेठी चूर्ण ,मधु तथा पिप्पली चूर्ण तथा शर्करा का अवपीडन नस्य हिक्का शामक है

सैंधव लवण + सुखोष्ण घृत का नस्य

रक्त चंदन को स्त्री दुग्ध में घिसकर नस्य देने से हिक्का शांत हो जाती

१. रस ओषधि/भस्म /पिष्टी

मात्रा - १२०-२५० MG

अनुपान -मधु/उष्ण जल

१ मयूर पिच्छ

२ ताम्र भस्म

३ हिक्कान्तक रस

४ सूतशेखर रस

५ लीलाविलास रस

६ श्वास कुठार रस

२ वटी-मात्रा २५०-५०० MG

अनुपान – उष्ण जल

आरोग्य वर्द्धनि वटी

शंख वटी

3. चूर्ण –
मात्रा - ३-६ ग्राम
अनुपान - उष्णोदक /शहद
१ – पिप्पली चूर्ण : पिप्पली
२ –त्रिकटु चूर्ण
३.- मुक्तादी चूर्ण
4-क्वाथ /आसव/अरिष्ट
मात्रा -२०-४० **ML**
अनुपान – समभाग जल
५ –घृत-
मात्रा :२०-३० **ML**
अनुपान :उष्णोदक
मनःशिलादि घृत
तेजोवत्यादी घृत

3-उपायअभिप्लुता चिकित्सा –
जिस समय हिक्का का वेग प्रबल हो उस समय हिक्का के वेग शामक उपायों का विवरण आचार्य चरक ने किया है –
१ –शीतल जल से मुख का परिषेक
२- सहसा त्रास उत्पन्न
३-.आश्चर्य उत्पन्न करना
४.-प्राणआदि का भय उत्पन्न करना
५ –सहसा हर्ष या क्रोध या उद्वेग उत्पन्न करना
६.-प्रिय वस्तु की अचानक प्राप्ति
से हिक्का का वेग शांत हो जाता है

4)-योग एवं प्राकृतिक उपाय – आचार्य सुश्रुत ने कुम्भक एवं प्राणायाम का विवरण हिक्का की चिकित्सा के संदर्भ में किया है

पथ्यापथ्य

पथ्य- आहार –मृदु एवं स्निग्ध भोजन ,पुराण गेहू ,जौ,साठी का चावल,मूंग,बिजोरा ,नीबू,कपित्थ,परवल,मूली,लशुन,गो दुग्ध,अजा दुग्ध,सेंधव लवण,ऊष्ण जल,ऊष्ण घृत आदि !

विहार –ऊष्ण जल से स्नान,आतप सेवन ,वेगों का धारण न करना,अल्पश्रम ,मैथुन व व्यायाम आदि

अपथ्य

आहार –गुरु, शीत अन्नपान,दधि,उड़द ,तिलकल्क,लस्सी,गरम मसाले ,जलीय जीवों का मांस,कटहल,राई,कंद,सेम ,मछली,विरुद्ध भोजन आदि

विहार – वेगधारण,धूल,धूम, अति मैथुन ,शीतल जल में तैरना,देर तक नहाना ,अतिश्रम व अतिव्यायाम